आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 03/07/2016 ● अंक - 574 ● तारीख - 04 जुलाई 2016, आषाढ कृष्ण - 15 ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

**सद्गुणों का अपने में विकास करो,
सत्कर्मो में सलग्न रहो,
सदा सत्संग में रहो।**

श्री देवनारायण

श्री देवनारायण भगवान विष्णु के अवतार माने जाते है। इनकी पूजा मुख्यतः राजस्थान, हरियाणा तथा मध्यप्रदेश में होती है।

भगवान श्रीदेवनारायण का अवतार सम्वत 968 में साडू माता गुर्जरी तथा गुर्जर श्री सवाईभोज बगड़ावत के घर में हुआ था। श्रीदेवनारायण भगवान के पूर्वज 24 भाई थे। 24 बगड़ावत चौहान गोत्र के गुर्जर थे। गुर्जर बाघसिंह के पुत्र होने के कारण ये इतिहास मे बगड़ावत नाम से प्रसिद्ध हुए।

बगड़ावत भारत

राणी जैमति को लेकर राण के राजा दुर्जनसाल से बगड़ावतों की जंग हुई। युद्ध से पूर्व बगड़ावतों तथा दुर्जनसाल की मित्रता थी तथा वे धर्म के भाई थे। ये युद्ध खारी नदी के किनारे हुआ था। बगड़ावतों ने अपना वचन रखते हुए राणी जैमति को सिर दान में दिये थे। बगड़ावतों के वीरगती प्राप्त होने के बाद श्रीदेवनारायण का अवतार हुआ तथा उन्होने राजा दुर्जनसाल का वध किया।

देवजी की 3 राणिया थी–पीपलदे (धार के गुर्जर परमार राजा की बेटी), नागकन्या तथा दैतकन्या।

श्री देवनारायण के अन्य नाम

1. 11वीं कला का असवार
2. लीला घोड़ा का असवार
3. त्रिलोकी का नाथ
4. देवजी
5. देव महाराज
6. देव धणी
7. साडू माता का लाल
8. उधा जी

कल्याणकारी वचन

संत सभा सीखी नहीं, कियो न प्रभू गुण गान
ए मानव तू कौन विधि, फिर चाहत कल्याण।।
नफरत भाई से भाई का रिश्ता तोड़ देती है।
मोहब्बत दुश्मनों से भी, दिलों को जोड़ देती है।
धार से जो पार कर दे, सही वही पतवार है।
बेसहारे को सहारा दे, वही आधार है।।
सम्मान पाने के लिए सम्मान देना होगा,
ज्ञान पाने के लिए परिश्रम करना ही होगा।
दुःख देकर कभी सुख नहीं मिलता मित्रों,
सुख पाने के लिए सुख देना ही होगा।
आलस्य से दरिद्रता उत्पन्न होती है।
जबकि परिश्रम सौभाग्य के द्वार खोलता है।

अवैध शराब बनाने-बेचने की शिकायतें होंगी ऑनलाइन दर्ज

अवैध शराब की बिक्री, शराब दुकान के निर्धारित समय से अधिक खुलने, हथकढ़ शराब बनाने और शराब मिलावट सहित तमाम तरह की शिकायतें अब राज्य में आबकारी विभाग ऑनलाइन दर्ज होगी।

शिकायतकर्ता को रजिस्ट्रेशन नबंर देने के साथ ही तीन दिन में शिकायत को निस्तारण कर रिपोर्ट भी ऑनलाइन भेजी जाएगी।

शराब की दुकानों के अवैघ निर्माण व बिक्री को लेकर आए दिन आबकारी विभाग में शिकायतें आती है। शिकायतकर्ताओं की कार्यालय में पहुँचने वाली भीड़ को कम करने और अवैध शराब करोबारीयों की धरपकड़ को लेकर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने की व्यवस्था लागू की जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि शिकायत मिलने पर तत्काल संबंधित जिला आबकारी अधिकारी को संदेश पहुँचेगा। वे संबंधित आबकारी निरीक्षक के जरिए शिकायत का निस्तारण पर कार्रवाई नहीं होती तो फिर विभाग की और से जिला आबकारी अधिकारी को दिन में कई बार एसएमएस अलर्ट भेजे जाऐगे। फिर भी शिकायत का निस्तारण नहीं हुआ तो संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

गौरवमयी धरा -राजस्थान की

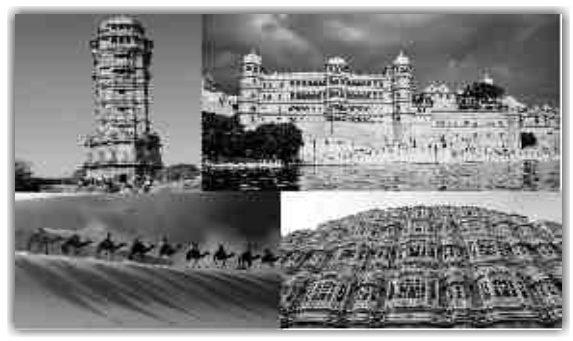

राजस्थान का इतिहास हमारी गौरवमयी धरोहर है, जिसमें विविधता के साथ निरन्तरता है। परम्पराओं और बहुरंगी सांस्कृतिक विशेषताओं से ओत–प्रोत राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ की मिट्टी का कण–कण यहाँ के रण बांकुरों की विजय गाथा बयान करता है। यहाँ के शासकों ने मातृभूमि की रक्षा हेतु सहर्श अपने प्राणों की आहूति दी। कहते हैं राजस्थान के पत्थर भी अपना इतिहास बोलते हैं। यहाँ पुरा सम्पदा का अकूत खजाना है। कहीं पर प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की छटा है तो कहीं प्रचीन संस्कृतियों के प्रमाण हैं। कहीं प्रस्तर प्रतिमाओं का शैल्पिक प्रतिमान तो कहीं शिलालेखों के रूप में पाषाणों पर उत्कीर्ण गौरवशाली इतिहास। कहीं समय का इतिहासिक बखान करते प्राचीन सिक्के तो कहीं वास्तुकला के उत्कृष्ठ प्रतीक। उपासना स्थल, भव्य प्रासाद, अभेद्य दुर्ग एवं जीवंत स्मारकों का संगम आदि राजस्थान के कस्बों , शहरों एवं उपड़ी बस्तियों में देखने को मिलता है। राजस्थान के बारे में यह सोचना गलत होगा कि यहाँ की धरती केवल रणक्षेत्र रही है। सच तो यह है कि यहाँ तलवारों की झंकार के साथ भक्ति और आध्यात्मिकता का मधुर संगीत सुनने को मिलता है। लोकपरक सांस्कृतिक चेतना अत्यन्त गहरी है। मेले एवं त्योहार यहाँ के लोगों के मन में रचे–बसे हैं। लोकनृत्य एवं लोकगीत राजस्थानी संस्कृति के संवाहक हैं। राजस्थानी चित्रशैलियों में श्रृंगार के साथ लौकिक जीवन की भी सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। आज़ादी से पूर्व राजस्थान विभिन्न छोटी–छोटी रियासतों में बँटा हुआ था। 19 देशी रियासतों, 2 चीफ़शिपों एवं एक ब्रिटिश शासित प्रदेश में विभक्त था। इसमें सबसे बड़ी रियासत जोधपुर थीं और सबसे छोटी लावा चीफ़शिप थी। राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया समस्त भारतीय राज्यों के एकीकरण का हिस्सा थी। एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल, वी.पी. मेनन सहित स्थानीय शासक, रियासतों के जननेता, जिनमें जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा, पं. हीरालाल शास्त्री, प्रेम नारायण माथुर, गोकुल भाई भट्ट आदि शामिल थे, की अहम् भूमिका रही। जनता रियासतों के प्रभाव से मुक्त होना चाहती थी क्योंकि वह उनके आतंक एवं अलोकतांत्रिक शासन से नाखुश थी। साथ ही, वह स्वयं को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना चाहती थी। राजस्थान में संचालित राष्ट्रवादी गतिविधियों एवं विभिन्न कारकों ने मिलकर राजस्थान में एकता का सूत्रपात किया। फलतः 18 मार्च, 1948 से 1 नवम्बर, 1956 तक सात चरणों में राजस्थान का एकीकरण सम्पन्न हुआ। 30 मार्च, 1949 को वृहत् राजस्थान का निर्माण हुआ, जिसकी राजधानी जयपुर बनायी गयी और पं. हीरालाल शास्त्री को नवनिर्मित राज्य का प्रथम मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया।

खुशहाली एवं शान्ति के साथ वास करने का अनुभवःशाकाहार

भोजन न सिर्फ हमारी भूख मिटाता है, बल्कि यह हमारे मन, शरीर एवं आत्मा का भी पोषण करता है, एवं सिर्फ जीवित रहने के लिये भोजन करना पर्याप्त नहीं है हम अपने जीवन में संतुलन, खुशी एवं परमानंद की प्राप्ति के लिये प्रयास करते हैं एवं भोजन चेतना की इस अवस्था को प्राप्त करने में एक प्रमुख कारक है

इसलिये यही वह समय है जब हम अपने स्वास्थ्य को गंभीरतापूर्वक लें एवं शाकाहारी बनें यह सोचना एक गलत धारणा है कि यदि हम मांसाहारी भोजन (मांस, मछली एवं मुर्गी) नहीं करते हैं तो हमें एक उचित संतुलित आहार नहीं मिल रहा है तथा अपने आहार से मांसाहारी भोजन को पूरी तरह छोड़कर हम बीमार हो सकते हैं इसके विपरीत, बहुत से अनुसंधानों एवं अध्ययनों ने यह दिखाया है कि शाकाहारी भोजन करने वाले व्यक्ति अधिक लंबी आयु तक जीते हैं एवं बहुत सी बीमारियों के प्रति कम प्रवृत्त होते हैं जिसके प्रति मांस खाने वालों की संभावना अधिक होती है मांसाहार महत्वपूर्ण रूप से प्रमुख चिरकालिक बीमारियों जैसे कि हृदय रोग, कैंसर, गुर्दा की बीमारी एवं अस्थि –सुषिरता को बढ़ाता है मांसाहार दूषणकारी तत्वों जैसे कि हारमोनों, वनस्पतिनाशकों , कीटनाशकों एवं प्रतिजैविकी से भरे होते हैं। मांस भक्षण करने से हमारे शरीर एवं आत्मा पर होने वाले प्रभावों को रोकने एवं सोचने की जरूरत है यह शरीर में पशु आवृत्ति को बढ़ाता है एवं अधिक पशुवत प्रवृत्तियों जैसे कि क्रोध, काम लिप्सा, भय एवं हिंस्र आवेगों का परिचालन करता है मांसाहार भोजन में ऊर्जा मन एवं तंत्रिका तंत्र की अशुद्धता को बढ़ाता है यह हमारे शरीर में कोशिकाओं के बीच क्षय ऊर्जा को फैलाता है हमारे स्वर्ण क्षेत्रों में मृत्यु ऊर्जा को लाकर शरीर में उच्चतर प्राण के प्रवाह को कम करता है हमारे द्वारा भक्षण किये गये जीवों का जीवन हमारे तारामय शरीर को भय एवं मृत्यु के समय उनके कष्टों से संबंधित नकारात्मक भावनाओं से दबा देता है।

हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति गैर–मांसाहारी है हमारे दाँत अनाज एवं सब्जियों को पीसने के लिये सही हैं और न कि जानवरों के मांस को फाड़ने के लिये। मनुष्य की आंत नली मांसाहारी पशुओं की अपेक्षा अधिक लंबे होते हैं, कच्चे मांस जीवाणुओं से भरे होते हैं एवं इसे खाने वाले पशु को इसे शीघ्रतापूर्वक अपनी आंत से निकालना चाहिये, इसलिये चूँकि मनुष्य की आंत अधिक लंबी होती हैं इसके सभी जीवाणु शरीर में मांसाहारी पशुओं की अपेक्षा अधिक लंबे समय तक टिकते हैं हमारी चयापचयी क्रिया मांस को तोड़ने एवं पचाने के लिये तैयार नहीं की गयी है।

शाकाहारी मनुष्य के रूप में हमें अपने पर्यावरण के प्रति अधिक ध्यान देने की जरूरत है पशुओं का पालन–पोषण केवल उन्हें भोजन के लिये मारने के लिये करने से हमारे बहुमूल्य संसाधनों की असाधारण बर्बादी हो रही है यह किसी के हृदय के लिये अतिसंवेदनशीलता की बात है कि यदि आपके हृदय में दया है तो कैसे आप केवल अपने पेट की भूख मिटाने के लिये एक निर्दोष पशु को मार सकते हैं? मनुष्य के रूप में हमें पशुओं के प्रति जागरूकता एवं दया बढ़ाना चाहिये क्योंकि वे भी ईश्वर की कृति हैं एवं उन्हें भी मनुष्यों के समान जीने का अधिकार है हमसे पशुओं एवं ग्रह के रखवाले एवं रक्षक न कि शोषक एवं हत्यारे होने का अभिप्राय है।

एक शाकाहारी आहार का चुनाव कर आप अनुकूलतम स्वास्थ्य एवं पशु साम्राज्य में अपने मित्रों के साथ खुशहाली एवं शान्ति के साथ वास करने का अनुभव कर सकते हैं।

जिनको सत्य दिखाई देने लगा, वे भाग्यशाली है।

अपने आप से सवाल पूछें, 'असली भाग्यशाली कौन ?' इसकी एक और परिभाषा इस तरह है–जिनकी आँखें सत्य जानकर खुल गईं, जिन्हें सत्य दिखाई देने लगा वे भाग्यशाली हैं। हकीकत में जब यह कहा जाता है कि 'यह मेरी घड़ी है जो मेरी कलाई पर बँधी है' तो इसका अर्थ है, 'मैं घड़ी नहीं हूँ।' उसी तरह जो कहा जाता है कि 'यह मेरा शरीर है' तो इसका अर्थ यह हुआ कि 'मैं शरीर से अलग हूँ।' फिर भी लोगों से घड़ी–घड़ी यह गलती क्यों होती है ? घड़ी को तो आप अलग समझते हैं मगर शरीर के लिए कहते हैं कि 'यह मेरा शरीर है।' 'वास्तव में मेरा शरीर यानी मैं शरीर से अलग हूँ' यह ज्ञात होने के बाद भी अपने आपको शरीर मानने की गलती क्यों होती है ? इसलिए कहा गया है कि भाग्यशाली वह जो यह जान गया कि मैं कौन हूँ ?

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समान

गतांक से आगे...

प्रभु हम जो करने योग्य नहीं हैं, उसे करना ही नहीं चाहते। ठाकुर जी ने कहा–बेटा, कठिन काम भी करवाऊँगा मैं। सेटेलाईट हॉस्पीटल सामने खुल गया, उद्घाटन समारोह में मुझे भी बुलाया गया। उद्घाटन किया गया पी.एन टी. कॉलोनी की फाटक के ठीक सामने सेटेलाईट हॉस्पीटल उस समय, डॉ. बी. आर. चौधरी साहब, डॉ. साँचोरा साहब, बहुत सारे ही महानुभाव अच्छे हैं–बाबूड़ा। रे वो बुरा ये–बुरा, अपनी बुराई हम स्वयं देखें तो अपना ाम हो जावे। तेरे भावे जो करे, भलो–बुरो संसार। ुलसी तू तो बैठकर, अपना भवन बुहार।। अपने परिवार में होंगे, उनकी गलतियाँ होगी तो भी बताऐंगे। उनको अच्छा रखेंगे, उनको चरित्रवान बनाऐंगे, उनको सहचरित्र बनाऐंगे। उनको अच्छा ईमानदारी का पाठ पढ़ाऐंगे। लेकिन दुनिया की भीड़ में तो बहुत हैं–महाराज, रास्ते चलते को बार–बार आप कहते रहो, बार–बार उनसे उलझते रहें तो अपना भवन कब बुहारेंगे। कर्मशील रहना है, व्यसन छुड़ाना है। भगवान बहुत काम करवा रहा है। मैं आपको निवेदन कर रहा था कि सेटेलाईट हॉस्पीटल खुला तो लगन लगी, भाई यहाँ के बीमारों को दो चीजों की बहुत जरूरत पड़ती है, एक तो भोजन की व दूसरी दवाइयों की। भोजन की नितांत जरूरत थी, गवर्नमेंट की कोई व्यवस्था नहीं थीइनको भोजन कराने की। अब बीमार भर्ती हो गया, पास के गाँव से भोजन लाने वाला भी नहीं, पैसा भी नहीं। उस समय फिर मैंने टी.जीपागे साहब, उनके गुणों को मैं नहीं भूल सकता, इस अंतरिक्ष में बिराजते हुए आर्शीवाद दे रहे हैं त्रयम्बक गोविन्द पागे। टी.जी. पागे रेल्वे के अधिकारी, इतने उदार, इतने सरल, इतने सच्चे, इतने अच्छे इंसान, मिलना हुआ प्रेम बढ़ा। प्रेम देने की ही वस्तु है, प्रेम देना ही देना। प्रेम कोई सौदा नहीं है, प्रेम अपनी ओर से देते जाइये, देते जाइये, बस देते जाइये। तो जैसे ही मिले तो यूँ लगा कि कई जन्मों का परिचय हो। उस समय भी उनकी उम्र करीब 55 साल थी, रेल्वे में जाते थे, समय के बहुत पाबंद। मैंने उनसे निवेदन किया बाबूजी, ये कार्य तो बहुत अच्छा है।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

चक्रवर्ती राजा जनक की मखमली गदेलों पर करवटें बदलते हुए झपकी लगी ही थी कि पड़ौसी देश के राजा ने संदेश भेजा – "युद्ध के लिए तैयार हो जाओ अथवा अधीनता स्वीकार करो।" युद्ध होना ही था–हुआ। राजा जनक बुरी तरह हारे। सब कुछ छोड़ कर भगे जा रहे हैं–भूखे प्यासे, शत्रुओं द्वारा पकड़े जाने का बड़ा भय, तीन दिन से अन्न का दाना नहीं गया पेट में। कपड़े तो तार–तार हो ही गये थे, लगा कि भूख के मारे प्राण भी साथ छोड़ देंगे।

सामने नजर गई तो देखते हैं कि लम्बी सी लाईन लगी हुई है। सब के हाथों में कटोरे हैं। तख्ते पर बैठा हुआ व्यक्ति कड़ाह में से, खिचड़ी निकालता है तथा एक–एक व्यक्ति के कटोरे में रख देता हैं। भूख के मारे राजा जनक लाईन में लग गये। दो घण्टे बाद जब नम्बर आया तो देखा कि मात्र थोड़ी सी ही खिचड़ी बची हैं। जैसे ही उनका नम्बर आया मात्र जली हुई खिचड़ी चिपकी रह गयी थी। बड़े करूण हृदय से बोले सेठजी किसी तरह से यह जली हुई ही मुझे दे दो, भूख बहुत लगी है। "जैसी तुम्हारी इच्छा" कहते हुए मुनीमजी ने जली हुई परत के दो चम्मच फैले हुए दोनों हाथों पर रख दिये। काँपते हुए हाथ मुँह की तरफ बढ़े ही थे कि कुत्ते ने झपटा मारा, जनक जी चित्कार कर उठे, और उनकी चित्कार सुनते ही सुनयना जी ने घबरा कर पूछा "क्या हुआ महाराज"? आप नींद में चिल्लाते कैसे? "विदेहराज तो चारों तरफ देखते जा रहे थे, दो ही प्रश्न बार–बार पूछ रहे थे या यह सच, वह सच? तथा भूख की इतनी व्याकुलता कैसे सहन हो।"

पहले प्रश्न का उत्तर तो अष्टावक्र जी महाराज ने भरी सभा में जनक जी को दिया था, परन्तु दूसरा प्रश्न अभी भी समाज के सामने उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। कुछ कहावतें हमने झूठी होती देखी – उनमें से एक यह भी कि "भगवान भूखा उठाता है पर सुलाता नहीं।" उन आदिवासियों के झोपड़े भी हमने देखे हैं जहाँ तीन–तीन दिन से चूल्हे नहीं जले।

आइए, आप और हम भी ऐसे निराश्रित असहाय लोगों की आखों में झांकने का प्रयास करें। हमारा हृदय इन प्रश्नों का उत्तर देगा– हमारी करूणा जगेगी–प्रभु कृपा से।

क्रांति-कथा

क्रान्ति–कर्म से करूणा की

क्रान्ति–है सद्कर्म की
कथा–है मानव धर्म की

बात–बात पे उलझ रहे, बात–बात पे बतंगड़ बना रहे है, बात–बात पे गुस्सा कर रहे है, क्रोध कर रहे है, थाली फेंक रहे है वो जो भाई वो भाई नाम तो महाराज सुन्दर लाल न ऊपर से सुन्दर न अन्दर से सुन्दर चमड़ी के रंग से क्या फर्क पड़ता है लाल। रख दिया माता पिता ने सुन्दर लाल सुन्दर है भाई गोरो है अब सुन्दर लाल और उसकी पत्नी एक रूठी बाई मेवाड़ में रूठी अक्सर कहीं जब वो ऐट होती है थोड़ा घमण्ड होता है बचपन से में ज्यादा जानता हूँ।

काम बड़ो वो हि बड़ो, वृथा बड़ो आकार।
हाथी मोटा दाँत रो, नाना नख रो नार।।

जाने कही एक गृहस्थ में एक अच्छी नारी थी जो जानती तो बहुत कम थी यू दुनिया को बताती रहती थी की में सब कुछ जानती हूँ। अब उनके पति ने कहा आज तो हलवा बनाना है पिता जी का श्राद्ध है ब्राह्मण को जिमाना है अब हलवा बनाना आवे तो नी यू मन में रेवे में क्या कैसे बोलू मुझे नहीं आता है। पड़ौसी के घर गयी भाभी जी भाभी जी ऐसे तो हलवा बनाना मुझे आता है फिर भी बता दो कोई बात नहीं सबसे पहले क्या करते है के भाभी जी ने कहा भाई सबसे पहले घी को गर्म करते है हाँ ये तो मुझे आता है आप तो आगे बताओं उसके बाद में जब घी खूब अच्छा गर्म हो गया तो उसमें आटा डालते है और खूब हिलाते है ये तो आवे मने अब वो पड़ौस वाला भाभी जी ने सोचा ये देवी ने सब आवे तो मने पूछ क्यों रही है। तो उसको अन्दर कुछ हँसी मजाक की सूझी उन्होंने कहा उसके बाद में ये जब गर्म–गर्म हिलावों दो सौ ग्राम केरासीन है ना इस कड़ाई में डाल देना फिर हिलाना हाँ यो भी आवे मने लो सा केरोसीन हलवा में डाला तो कर्म फूटी गया।

काम बिगाड़े आपणो, जब में होत हँसाय।
बिना विचार जो करे, सो पाछे पछताय।।

मैं आपको माहात्म्य निवेदन कर रहा था ये नालायक परिवार का दिन में टेन्शन–टेन्शन गुस्सा चोरी बेईमानी नालायकी झगड़ा करना रात भर नींद नहीं आना बच्चों की शिक्षा नहीं पूरी अपाहिज बच्ची पर गुस्सा करना तू क्यों पैदा हुई ऐसी नालायकी से जीवन नर्क बना हुआ है।

क्रमशः अगले अंक में...

संत से आया जीवन में बसंत

'संत श्री सलिल जी ने प्रदान किया कृत्रिम पैर नारायण सेवा में'

सकारात्मक सोच और परोपकार के भाव जीवन की दशा और दिशा बदलते हैं। लौकिक साधनों की उपलब्धि ही सफलता नहीं हैं, आध्यात्मिक वैभव भी होना चाहिए। यह बात देश के जाने माने कथाकार भागवताचार्य पूज्य संत डॉ. संजय कृष्ण जी सलिल ने नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहीं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान के विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों का अवलोकन कर उन्होंने सेवा कार्यो की सराहना की उन्होंने संस्थापक चैयरमैन श्री कैलाश जी मानव से भी भेंट की। श्री मानव जी ने उन्हें संस्थान साहित्य भेंट किया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने बताया कि सलिल जी महाराज ने संस्थान के मानव मन्दिर में बनासकांठा (गुजरात) के जितेन्द्र भाई साधु को कृत्रिम पैर प्रदान किया। श्रीमती अग्रवाल ने बताया कि जितेन्द्र भाई सन 2014 के एक सड़क हादसे में अपना पैर खो बैठें थें। कृत्रिम पैर लगनें से अब वे आसानी से चल–फिर सकेंगें। उन्होंने बताया कि सेवा के इस मन्दिर में संतश्री के सानिध्य में उन्हें नव बसंत प्राप्त हुआ हैं। इस अवसर पर निदेशक वंदना अग्रवाल, देवेन्द्र चौबीसा, पलक अग्रवाल ओर महिम जैन नें संत श्री का अभिनन्दन किया।

पोषक तत्वों से भरपूर -टमाटर

रोज एक–दो टमाटर खाने से डॉक्टर की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। आजकल पुरी दुनिया में टमाटर का उपयोग भारी मात्रा में होता है। आलू और शकरकंद के बाद, समग्र विश्व में, उत्पादन की दृष्टि से टमाटर का क्रम आता है।

टमाटर में आहारोपयोगी पोषक तत्त्व काफी मात्रा में होने के कारण ये हरी साग–भाजियों में एक फल के रूप में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

टमाटर भारत में सर्वत्र होते हैं। ये बलुई से लेकर सभी प्रकार की जमीन में होते हैं। परंतु इसे कठोर, क्षार या रेतवाली जमीन अनुकूल नहीं पड़ती। टमाटर सख्त ठंडी को सहन नहीं कर सकते। भारी वर्षावाली और ठंडी ऋतु को छोड़ किसी भी ऋतु में इसके बीजों की पनीरी बनाकर इसे उगाया जा सकता है।

सामान्यतः वर्ष में दो बार, वर्षाऋतु में और शीतकाल में (मई–जून तथा अक्तूबर– नवम्बर मास में) टमाटर बोये जाते हैं। यद्यपि बाजार में तो ये वर्षभर मिलते हैं।

टमाटर के पौधे दो से चार फुट ऊँचे बढ़ते हैं। शाखाओं पर अंतर से पर्ण लगते हैं। इसके पत्ते बैंगन के पत्तों की अपेक्षा छोटे होते हैं। टमाटर के बीज बैंगन या मिर्च के बीज से मिलते–जुलते होते हैं। इसके पौधे हल्के धुँधले रंग के दीखते हैं। उनमें से कुछ उग्र और खराब बदबू आती है।

टमाटर की कई किस्में होती हैं। इनकी आकृति, रंग और स्वाद भिन्न–भिन्न होते हैं। टमाटर जितने बड़े हों उतने ही गुण में उत्तम होते हैं। कच्चे टमाटर हरे रंग के, खट्टे और पचने में हल्के होते हैं, परंतु जब ये पकने लगते हैं तब चमकते–तेजस्वी लाल रंग के होते हैं।

आलू या शकरकंद की सब्जी में टमाटर डालकर बनाई हुई मिश्र तरकारी स्वादिष्ट होती है। गुड़ या शक्कर डालकर बनाया हुआ टमाटर की सब्जी खटमीठी, अत्यंत स्वादिष्ट, रुचिकर और पाचक होती है।

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत्

निःशक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायसेंस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/महेन्दी/अगरबत्ती/हाईवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 225000/-

50 रोगियों की आजीवन भोजन /नाश्ता मित्ती

वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 22,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 11,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता मित्ती सहयोग राशि	- 5,000/-

बालगृह शिक्षा सहयोग योजना

एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि	- 600/-
एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि	- 7200/-

आजीवन लालन–पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे के आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन मित्ती)

एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100/-
एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि- 2100 X12 =25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि	- 2100 X12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च	- 600 X 12 = 7200 /-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च	- 2500/-	विविध खर्च राशि	- 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि	- 41800/-		

प्रति निःशक्त शिविर सहयोग राशि - 1,51000/-
सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org
आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

पढ़ेंगे - लिखेंगे होंगे कामयाब

सादर अनुरोध - आपश्री संस्थान की दान प्राप्ति रसीद बुक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-0294-6622222,9649499999

■ इच्छा शक्ति कल्पवृक्ष के समान है जो आपको हर वो चीज दे सकती है जिसको आप कल्पना करते हैं।

मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म शृंखला का षष्टम् (6) पुष्प)

औरों के बच्चे खेल रहे,
मेरा बालक क्यूं बैठा है।
वह हाथ उठा नहीं पाता,
हँसता भी नहीं अध लेटा है।।(38)

ये टाबर भी अपने हैं बाबूड़ा, ये माँ बहुत – थोड़ा आपसे चाहती है, इनकी बच्ची को आप खड़ा कर दीजिए। इनके बेटे को आप चला दीजिए, इनके बेटे–बेटी के मुँह से लार निकल रही है, ये जन्मजात विकलांग है, इनका कसूर नहीं है। ये सीपी का बच्चा है, ये सेरेब्रल पाल्सी हो गई, ये प्रमस्तिष्क घात हो गया। आप इनके सहारे बन जाइये, धर्म प्रसन्न हो जायेगा, दया करूणा मुस्कुरा उठेगी, आपका धर्म, आपका प्यार, आपकी मोहब्बत यही तो धर्म है बाबू, यही तो धर्म है। बोलिये कृष्ण कन्हैया लाल की जय।

नृसिंह भगवान ने प्रहलाद जी को कहा – धर्म जो धारणा में आ जावे, धर्म जो व्यवहार में उतर जाये, धर्म जो अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त के सदुपयोग में आ जावे, उस धर्म को प्रणाम करते हैं, बोलिये धर्म की जय।

व्यवहार और मर्यादा की रेखा

समुद्र मंथन, शरीर का हेडमास्टर

वर्णानाम अर्थसंघाणाम् रसानाम् छन्द सामपि।
मंगलाणाम च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।।(39)
जो सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि शुभ गुन सदन।।(40)
मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।

जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलि मल दहन।।(41)

ऊँ नृसिंहाय नमः। नृसिंह भगवान की कृपा की अनुभूति करते हुए भक्तराज प्रहलाद और हमारे परम् ऋषि, महर्षि, आदि ऋषि, अमर ऋषि, मार्कण्डेय ऋषि को प्रणाम नमन करते हुए, इस मंच पर बिराजमान मानव धर्म के रसिया, आप सभी को, सरस्वती पुत्रों को, तकनीकी महानुभावों को, देवी–देवताओं को प्रमाण करता हुआ, अपने–अपने माताजी–पिताजी, अपने दादाजी–दादीजी, अपने नानाजी–नानीजी, अपने गुरूजन–कुलमाताजी को नमन करता हुआ मैं आप सभी की बहुत–बहुत मंगल कामना करता हूँ।

अभी–अभी आपने फरमाया मर्यादा पुरूषोत्तम। मर्यादा ही व्यवहार है, मर्यादा ही धर्म है और जब हम साकेत में पढ़ते हैं कि लक्ष्मण जी कहते हैं–

''रहना इस रेखा के भीतर, न जाने अब क्या होगा''(42)

इस रेखा को तोड़ेंगे तो नुकसान होता है। ये व्यवहार की रेखा, ये मर्यादा की रेखा, ये समुद्रमंथन की रेखा, ये देवी–देवताओं और असुरों के युद्ध की रेखा, ये मंदराचल पर्वत की वो रेखा, वासुकी नाग की रेखा। जहाँ एक तरफ देवता अर्थात् अच्छा कार्य करने वाले, देवता अर्थात् धर्म वाले, देवता अर्थात् मानव धर्म का काम करने वाले और दुष्ट इत्यादि अधर्म वाले, कभी कुलदागी बनते हैं, कभी कुचाली बनते हैं, कभी कलहकारिणी बनते हैं, कभी घर में फूट डालते हैं, कभी क्रोध रूपी अग्नि में स्वयं को भी जला देते हैं और दूसरों को भी जला देते हैं। ऐसे अधर्म और धर्म वालों का युद्ध, जिसमें धर्म हमेशा जीतता है। हमेशा समुद्रमंथन होता है आपके–हमारे मनों के अंदर। आईये गायत्री मंत्र का महाजाप करके अपने–आप को धन्य करें–

गायत्री मंत्र

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।(43)

हे धी ! धी कहते हैं बुद्धि को, सद्बुद्धि को। धर्म का एक बहुत बड़ा लक्षण है धी, अर्थात् सद्बुद्धि और गायत्री महामंत्र, जिनके लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विभूति योग में कहा– हे अर्जुन! मैं छन्दों में गायत्री हूँ। 'छन्दोऽसि गायत्री अहं' ये त्रिगुण सूत्र 'ऊँ भूर्भुवः स्वः' इस पूरे पृथ्वीलोक पर, अंतरिक्षलोक पर, पाताललोक पर, चारों तरफ जो विद्यमान हैं, ऐसे परब्रह्म परमात्मा, जो हमारे रोम–रोम में रम रहे हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलयक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com